कशती में पनाह

हज़रत नूह और बड़ा सैलाब

kashtī meṅ panāh. hazrat nūh aur baṛā sailāb

Refuge in the Ark. Noah and the Big Flood

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam 3*]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 www.chashmamedia.org

published and printed by
GWCS, New Delhi

illus. R. Gunther
https://freebibleimages.org/illustrations/rg-noah-ark/;
https://freebibleimages.org/illustrations/ls-noah-ark/; I. Coate
https://basictraining.org/safe-in-jesus-2/

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

ख़ुदा के साथ चलो 2

कश्ती में पनाह लो 3

जागते रहो 10

अपनी जान उस पर सौंप दो 14

तौरेत, पैदाइश 6:5–9:17 18

इसमें कोई शक नहीं कि अदालत का दिन आएगा। सवाल यह है कि क्या हम उस वक़्त बचेंगे? एक आदमी की ज़िंदगी हमें इसका जवाब दे सकती है। आदमी का नाम? हज़रत नूह। हज़रत नूह के ज़माने में भी पूरी दुनिया की अदालत हुई, और थोड़े ही बच गए। लिखा है,

> रब ने देखा कि इनसान निहायत बिगड़ गया है, कि उसके तमाम ख़यालात लगातार बुराई की तरफ़ मायल रहते हैं।

► **रब ने क्या देखा?**

यह कि इनसान निहायत बिगड़ गया है।

► **न सिर्फ़ इनसान का काम बुरा है। और क्या है जो बुरा है?**

उसके ख़यालात। दिल ख़राब तो पूरा इनसान ख़राब। तब लिखा है,

> वह पछताया कि मैंने इनसान को बनाकर दुनिया में रख दिया है, और उसे सख़्त दुख हुआ।

► **इनसान की हालत देखकर ख़ुदा ने क्या महसूस किया?**

उसे सख़्त दुख हुआ।

► **इससे हम उसके बारे में क्या सीखते हैं?**

हम यह सीखते हैं : पाक ख़ुदा चाहता है कि इनसान भी पाक हो। हमारी बेवफ़ाई से उसे दुख होता है। आगे लिखा है,

> उसने कहा, "गो मैं ही ने इनसान को ख़लक़ किया मैं उसे रूए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा।"

► **इनसान की हरकतें देखकर ख़ुदा ने क्या फ़रमाया?**

उसने फ़रमाया कि मैं तमाम जानदारों को हलाक करूँगा।

► **इतना सख़्त फ़ैसला क्यों?**

क़ुद्दूस और पाक ख़ुदा के सामने हर नापाक चीज़ मिट जाती है। अब हम एक पहला सबक़ सीखते हैं, यह कि

ख़ुदा के साथ चलो

लिखा है,

> सिर्फ़ नूह पर रब की नज़रे-करम थी। [...] नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में सिर्फ़ वही बेक़ुसूर था। वह अल्लाह के साथ साथ चलता था।

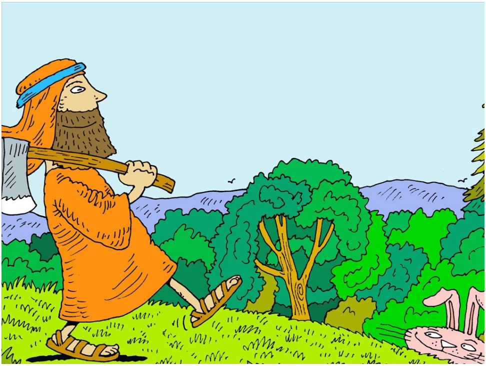

- **एक ही आदमी फ़रक़ था—हज़रत नूह। वह किस तरह फ़रक़ था?**

  उस पर ख़ुदा की नज़रे-करम थी। और वह रास्तबाज़ था।

- **वह किस नाते से रास्तबाज़ और बेक़ुसूर था?**

  इसमें कि वह अल्लाह के साथ साथ चलता था।

- **साथ साथ चलने का मतलब क्या है?**

  छोटा बच्चा, बाप का हाथ थामे चलता है। नूह इसी तरह ख़ुदा के साथ चलता था—मासूम और वफ़ादार बच्चे की तरह।

- **क्या आप नूह जैसे वफ़ादार हैं? दूसरा सबक़,**

कश्ती में पनाह लो

लिखा है,

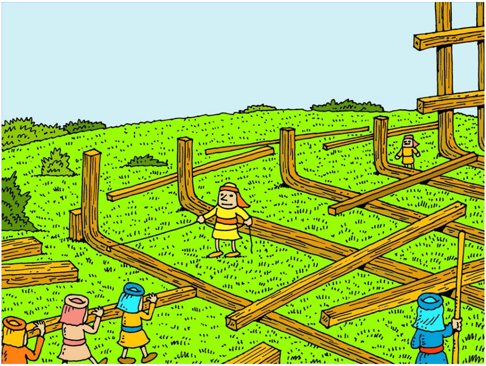

> तब अल्लाह ने नूह से कहा, “मैंने तमाम जानदारों को ख़त्म करने का फ़ैसला किया है, क्योंकि उनके सबब से पूरी दुनिया ज़ुल्मो-तशद्दुद से भर गई है। चुनाँचे मैं उनको ज़मीन समेत तबाह कर दूँगा। अब अपने लिए सरो की लकड़ी की कश्ती बना ले। [...] मैं पानी का इतना बड़ा सैलाब लाऊँगा कि वह ज़मीन के तमाम जानदारों को हलाक कर डालेगा।”

► **ख़ुदा ने क्या फ़ैसला किया है?**

उसने बड़ा सैलाब लाकर तमाम जानदारों को ख़त्म करने का फ़ैसला किया है।

► **क्या नूह भी हलाक हो जाएगा?**

ख़ुदा ने फ़रमाया,

> लेकिन तेरे साथ मैं अहद बाँधूँगा जिसके तहत तू अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं के साथ कश्ती में जाएगा। हर क़िस्म के जानवर का एक नर और एक मादा भी अपने साथ कश्ती में ले जाना ताकि वह तेरे साथ जीते बचें।

► **अपने वफ़ादार बंदे नूह के साथ ख़ुदा क्या करेगा?**

वह उसके साथ अहद बाँधेगा।

► **अहद क्या चीज़ होता है?**

अहद दो पार्टियों के बीच कंट्रैक्ट है, मुआहदा है।

► **अहद के तहत नूह को क्या करना है?**

उसे बड़ी कश्ती बनाकर उसमें जाना है। अपने साथ वह अपनी फ़ैमिली और क़िस्म क़िस्म के जानवर भी ले जाए।

► **अहद के तहत ख़ुदा क्या करेगा?**

ख़ुदा सबको जो कश्ती में जाएँगे महफ़ूज़ रखेगा। तब लिखा है,

> नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा अल्लाह ने उसे बताया। फिर रब ने नूह से कहा, "अपने घराने समेत कश्ती में दाख़िल हो जा।" [...]
> नूह ने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था।

► **क्या नूह ने वह कुछ किया जो ख़ुदा ने फ़रमाया था?**

जी हाँ। उसने सब कुछ वैसा ही किया जैसा ख़ुदा ने उसे बताया था।

► **क्या उसने डर की वजह से यह किया?**

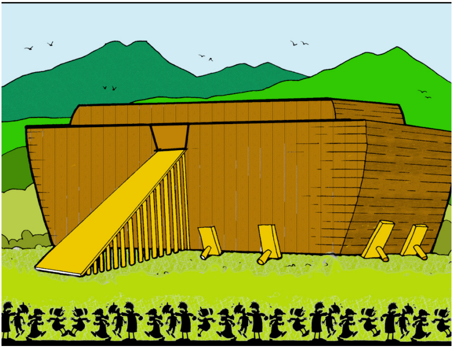

नहीं, उसने यह इसलिए किया कि वह वफ़ादार था। वह जानता था, कि जो भी ख़ुदा मुझसे चाहता है वह अच्छा है। वह मेरे लिए नेक इरादा रखता है।

► **जब तैयारियाँ मुकम्मल हुई तो ख़ुदा ने नूह को क्या कहा?**

उसने फ़रमाया कि अपनी फ़ैमिली के साथ साथ कश्ती में दाख़िल हो जा।

► **कश्ती में क्यों दाख़िल होना है?**

इसलिए कि वह बड़े सैलाब से बच जाएँ।

► **अब नूह ने क्या किया?**

उसने वैसा ही किया जैसा ख़ुदा ने फ़रमाया था। उन लोगों पर ख़ुदा की नज़रे-करम है जो उसकी सुनते हैं। यही वफ़ादारी का निशान है। तब लिखा है,

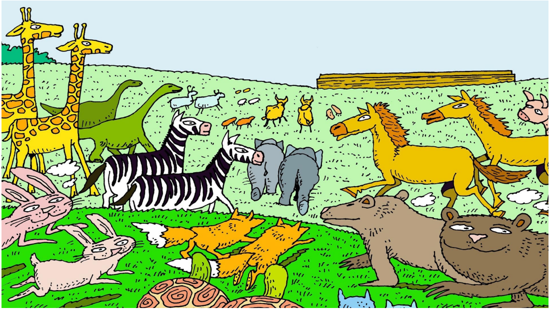

> तूफ़ानी सैलाब से बचने के लिए नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं के साथ कश्ती में सवार हुआ। ज़मीन पर फिरनेवाले पाक और नापाक जानवर, पर रखनेवाले और तमाम रेंगनेवाले जानवर भी आए। [...] फिर रब ने दरवाज़े को बंद कर दिया।

► **कौन कौन कश्ती में था?**

नूह, उसका घराना और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जानवर कश्ती में थे।

► **तब ख़ुदा ने क्या किया?**

उसने दरवाज़े को बंद कर दिया।

► **इससे नूह को क्या तसल्ली हुई?**

यह कि मेरी ज़िंदगी ख़ुदा के हाथ में है। उसी ने दरवाज़े को बंद किया है और वही बच निकलने का रास्ता मुहैया करेगा। तब लिखा है,

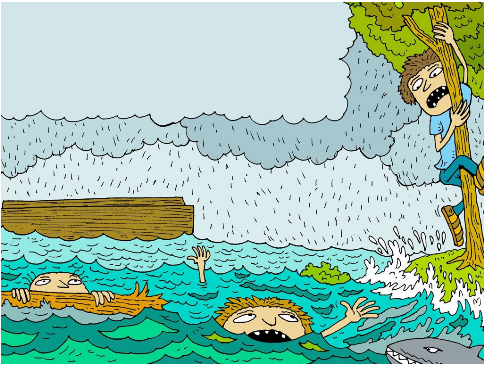

चालीस दिन तक तूफ़ानी सैलाब जारी रहा। पानी चढ़ा तो उसने कश्ती को ज़मीन पर से उठा लिया। पानी ज़ोर पकड़कर बहुत बढ़ गया, और कश्ती उस पर तैरने लगी। आख़िरकार पानी इतना ज़्यादा हो गया कि तमाम ऊँचे पहाड़ भी उसमें छुप गए, बल्कि सबसे ऊँची चोटी पर पानी की गहराई 20 फ़ुट थी। ज़मीन पर रहनेवाली हर मख़लूक़ हलाक हुई। [...] सिर्फ़ नूह और कश्ती में सवार उसके साथी बच गए।

► **सैलाब कितना बड़ा था?**

इतना बड़ा कि तमाम चोटियाँ पानी में डूब गई थीं।

► **क्या सब हलाक हुए?**

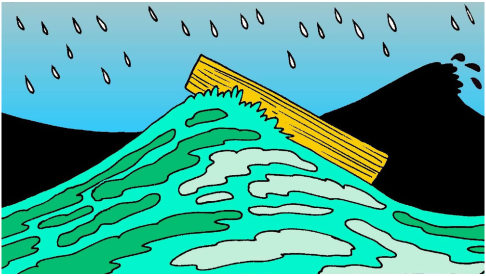

सब जो कश्ती में नहीं थे हलाक हुए। जिन्होंने कश्ती में पनाह ली थी वह बच गए। तब लिखा है,

> लेकिन अल्लाह को नूह और तमाम जानवर याद रहे जो कश्ती में थे। उसने हवा चला दी जिससे पानी कम होने लगा। ज़मीन के चश्मे और आसमान पर के पानी के दरीचे बंद हो गए, और बारिश रुक गई। पानी घटता गया।

► **क्या ख़ुदा कश्ती की सवारियों को भूल गया था?**

नहीं। वह उसे याद रहीं। पानी बंद हो गया और सैलाब घटने लगा। देखो, जिसने कश्ती में पनाह ली है वह जानता है कि ख़ुदा मुझे कभी नहीं भूलेगा। और जिस तरह नूह कश्ती में पनाह लेकर अदालत से बच गया उसी तरह हम भी अदालत से बच सकते हैं। जब हम ईसा मसीह में पनाह लेते हैं तब ही हम अदालत से बच जाते हैं।

► **क्या आपने ईसा मसीह में पनाह ली है? तीसरा सबक़,**

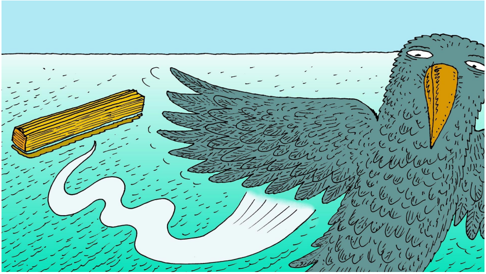

जागते रहो

लिखा है कि एक दिन

> नूह ने कश्ती की खिड़की खोलकर एक कौआ छोड़ दिया, और वह उड़कर चला गया। लेकिन जब तक ज़मीन पर पानी था वह आता-जाता रहा।

► **नूह ने कौए को क्यों छोड़ दिया?**

वह जानना चाहता था कि क्या कौए को ज़मीन पर टिकने की कोई जगह मिलेगी। लेकिन वह आता-जाता रहा।

► **इससे हम नूह के बारे में क्या सीखते हैं?**

यह कि वह बेदार था। जब उसने देखा कि पानी कम हो रहा है तो वह सोचने लगा कि मैं किस तरह कश्ती से बाहर के हालात जाँच सकता हूँ। तब उसे कौए को छोड़ने का ख़याल आया। आगे लिखा है,

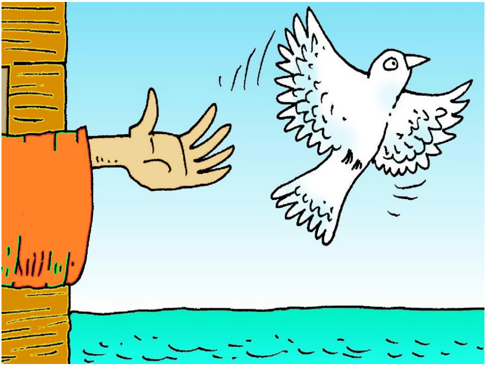

> फिर नूह ने एक कबूतर छोड़ दिया ताकि पता चले कि ज़मीन पानी से निकल आई है या नहीं। लेकिन कबूतर को कहीं भी बैठने की जगह न मिली, क्योंकि अब तक पूरी ज़मीन पर पानी ही पानी था। वह कश्ती और नूह के पास वापस आ गया, और नूह ने अपना हाथ बढ़ाया और कबूतर को पकड़कर अपने पास कश्ती में रख लिया।

► **अब कबूतर की बारी आई। क्या कबूतर को टिकने की जगह मिली?**

नहीं। फिर लिखा है,

> उसने एक हफ़्ता और इंतज़ार करके कबूतर को दुबारा छोड़ दिया। शाम के वक़्त वह लौट आया। इस दफ़ा

> उसकी चोंच में ज़ैतून का ताज़ा पत्ता था। तब नूह को मालूम हुआ कि ज़मीन पानी से निकल आई है। उसने मज़ीद एक हफ़्ते के बाद कबूतर को छोड़ दिया। इस दफ़ा वह वापस न आया।

▶ **एक हफ़्ते के बाद जब नूह ने कबूतर को दुबारा छोड़ दिया तो क्या हुआ?**

वह वापस तो आया मगर चोंच में ज़ैतून का ताज़ा पत्ता था।

▶ **तीसरी बार जब नूह ने कबूतर छोड़ दिया तो क्या हुआ?**

वह वापस न आया।

▶ **इसका क्या मतलब था?**

मतलब था कि ज़मीन पानी से निकल आई है।

यों नूह जागता रहा। वह हर वक़्त पता करता रहा कि ख़ुदा की मरज़ी क्या है।

► **क्या आप भी बेदार हैं? क्या आप भी ख़ुदा की मरज़ी जानने में लगे रहते हैं?**

मज़ीद दिनों के बाद लिखा है कि

> नूह ने कश्ती की छत खोल दी और देखा कि ज़मीन की सतह पर पानी नहीं है।

► **अब नूह ने क्या किया?**

उसने छत खोलकर देखा कि ज़मीन की सतह पर पानी नहीं है। इसके बाद लिखा है,

> फिर अल्लाह ने नूह से कहा, "अपनी बीवी, बेटों और बहुओं के साथ कश्ती से निकल आ। जितने भी जानवर साथ हैं उन्हें निकाल दे, ख़ाह परिंदे हों, ख़ाह ज़मीन पर फिरने या रेंगनेवाले जानवर। वह दुनिया में फैल जाएँ, नसल बढ़ाएँ और तादाद में बढ़ते जाएँ।"

► **क्या नूह ख़ुश्क ज़मीन को देखकर अपनी ही मरज़ी से कश्ती से निकल आया?**

नहीं। जब ख़ुदा ने उसे हुक्म दिया तब वह ख़ानदान और जानवरों के साथ निकल आया। नूह बेदार रहा। वह परिंदों को छोड़कर हालात जाँचता रहता था। और जब उसे ख़ुदा की मरज़ी का पूरा यक़ीन था तब वह कश्ती से निकल आया। चौथा सबक़,

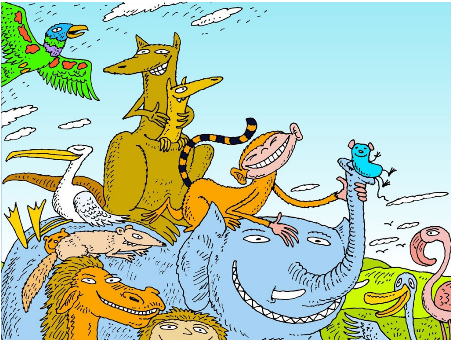

अपनी जान उस पर सौंप दो

लिखा है,

> उस वक़्त नूह ने रब के लिए क़ुरबानगाह बनाई। उसने तमाम फिरने और उड़नेवाले पाक जानवरों में से कुछ चुनकर उन्हें ज़बह किया और क़ुरबानगाह पर पूरी तरह जला दिया।

► **कश्ती से निकलते ही नूह ने क्या किया?**

उसने क़ुरबानी चढ़ाई।

► **उसने यह क्यों किया? क्या वह सवाब पाना चाहता था?**

नहीं। यह शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी थी। इससे वह कहना चाहता था कि मैं अपनी जान तेरे सुपुर्द करता हूँ। जो जानवर मैंने चढ़ाए वह मेरे एवज़ मंज़ूर हों।

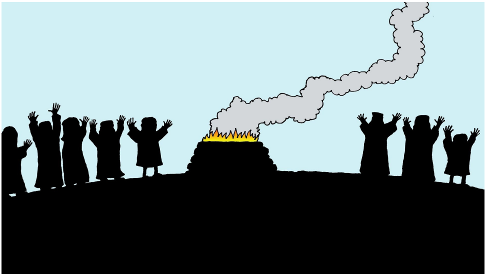

► **यह क़ुरबानी एक और क़ुरबानी की याद दिलाती है। वह क्या?** ईसा मसीह की क़ुरबानी। उसकी क़ुरबानी हमारे एवज़ हुई। हम ख़ुद तो अपने गुनाहों को मिटा नहीं सकते। इसलिए ईसा मसीह इस दुनिया में आया : ताकि हमारे एवज़ क़ुरबान होकर हमारे गुनाहों को मिटा डाले। ग़रज़ ईसा मसीह वह कश्ती भी है जिसमें हम पनाह ले सकते हैं और वह क़ुरबानी भी जो ख़ुदा को हमारी तरफ़ मायल करती है। यों लिखा है,

> यह क़ुरबानियाँ देखकर रब ख़ुश हुआ और अपने दिल में कहा, "अब से मैं कभी ज़मीन पर इनसान की वजह से लानत नहीं भेजूँगा, क्योंकि उसका दिल बचपन ही से बुराई की तरफ़ मायल है। अब से मैं कभी इस तरह तमाम जान रखनेवाली मख़लूक़ात को रूए-ज़मीन पर से नहीं मिटाऊँगा। दुनिया के मुक़र्ररा औक़ात जारी रहेंगे। बीज बोने और फ़सल काटने का वक़्त, ठंड और तपिश,

> गरमियों और सर्दियों का मौसम, दिन और रात, यह सब कुछ दुनिया के अख़ीर तक क़ायम रहेगा।”

► **ख़ुदा का क्या जवाब था?**

उसने ख़ुश होकर फ़रमाया कि अब से मैं ज़मीन पर इनसान की वजह से लानत नहीं भेजूँगा। ऐसा सैलाब आइंदा ज़मीन पर नहीं आएगा। दुनिया के मुक़र्रर मौसम भी जारी रहेंगे।

► **इसकी क्या वजह थी?**

ख़ुदा ने फ़रमाया कि इनसान का दिल बचपन ही से बुराई की तरफ़ मायल है।

► **ख़ुदा ने यह पहले भी फ़रमाया था। कब?**

यह कहकर उसने सैलाब भेजा था। देखो ख़ुदा का रहम। वह जानता था कि इनसान का दिल बुरा है। फिर भी उसने फ़रमाया कि ऐसा सैलाब आइंदा नहीं होगा। उसके ज़हन में एक बेहतर रास्ता था, वह रास्ता जो ईसा मसीह में आ मौजूद होगा। तब अल्लाह ने फ़रमाया,

> इस अबदी अहद का निशान जो मैं तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ क़ायम कर रहा हूँ यह है कि मैं अपनी कमान बादलों में रखता हूँ। वह मेरे दुनिया के साथ अहद का निशान होगा। जब कभी मेरे कहने पर आसमान पर बादल छा जाएँगे और क़ौसे-क़ुज़ह उनमें से नज़र आएगी तो मैं यह अहद याद करूँगा जो तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ किया गया है।

- **आख़िर में ख़ुदा ने एक बार फिर वादा किया। क्या वादा था?**

  आइंदा ऐसा सैलाब ज़मीन पर नहीं आएगा।

- **साथ साथ ख़ुदा ने अपने वादे का निशान भी क़ायम किया। वह क्या?**

  क़ौसे-क़ुज़ह (इंद्रधनुश)। यों उसका आख़िरी फ़रमान धमकी नहीं बल्कि उम्मीद-भरा वादा है।

- **क्या आपने ख़ुदा के साथ साथ चलकर उस कश्ती में पनाह ली—ईसा मसीह में जो हमें आख़िरी अदालत से बचाता है?**
- **क्या आप बेदार रहकर ख़ुदा की मरज़ी ढूँडते रहते हैं?**
- **क्या आपने अपनी जान ख़ुदा के सुपुर्द किया है?**

अगर आपने यह किया तो यह पक्का है कि आप क़ियामत के दिन बचेंगे।

तौरेत, पैदाइश 6:5–9:17

रब ने देखा कि इनसान निहायत बिगड़ गया है, कि उसके तमाम ख़यालात लगातार बुराई की तरफ़ मायल रहते हैं। वह पछताया कि मैंने इनसान को बनाकर दुनिया में रख दिया है, और उसे सख़्त दुख हुआ। उसने कहा, "गो मैं ही ने इनसान को ख़लक़ किया मैं उसे रूए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा। मैं न सिर्फ़ लोगों को बल्कि ज़मीन पर चलने-फिरने और रेंगनेवाले जानवरों और हवा के परिंदों को भी हलाक कर दूँगा, क्योंकि मैं पछताता हूँ कि मैंने उनको बनाया।"

बड़े सैलाब के लिए नूह की तैयारियाँ

सिर्फ़ नूह पर रब की नज़रे-करम थी। यह उसकी ज़िंदगी का बयान है।

नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में सिर्फ़ वही बेक़ुसूर था। वह अल्लाह के साथ साथ चलता था। नूह के तीन बेटे थे, सिम, हाम और याफ़त। लेकिन दुनिया अल्लाह की नज़र में बिगड़ी हुई और ज़ुल्मो-तशद्दुद से भरी हुई थी। जहाँ भी अल्लाह देखता दुनिया

ख़राब थी, क्योंकि तमाम जानदारों ने ज़मीन पर अपनी रविश को बिगाड़ दिया था।

तब अल्लाह ने नूह से कहा, “मैंने तमाम जानदारों को ख़त्म करने का फ़ैसला किया है, क्योंकि उनके सबब से पूरी दुनिया ज़ुल्मो-तशद्दुद से भर गई है। चुनाँचे मैं उनको ज़मीन समेत तबाह कर दूँगा। अब अपने लिए सुरो की लकड़ी की कश्ती बना ले। उसमें कमरे हों और उसे अंदर और बाहर तारकोल लगा। उसकी लंबाई 450 फ़ुट, चौड़ाई 75 फ़ुट और ऊँचाई 45 फ़ुट हो। कश्ती की छत को यों बनाना कि उसके नीचे 18 इंच खुला रहे। एक तरफ़ दरवाज़ा हो, और उसकी तीन मनज़िलें हों। मैं पानी का इतना बड़ा सैलाब लाऊँगा कि वह ज़मीन के तमाम जानदारों को हलाक कर डालेगा। ज़मीन पर सब कुछ फ़ना हो जाएगा। लेकिन तेरे साथ मैं अहद बाँधूँगा जिसके तहत तू अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं के साथ कश्ती में जाएगा। हर क़िस्म के जानवर का एक नर और एक मादा भी अपने साथ कश्ती में ले जाना ताकि वह तेरे साथ जीते बचें। हर क़िस्म के पर रखनेवाले जानवर और हर क़िस्म के ज़मीन पर फिरने या रेंगनेवाले जानवर दो दो होकर तेरे पास आएँगे ताकि जीते बच जाएँ। जो भी ख़ुराक दरकार है उसे अपने और उनके लिए जमा करके कश्ती में महफ़ूज़ कर लेना।”

नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा अल्लाह ने उसे बताया।

सैलाब का आग़ाज़

फिर रब ने नूह से कहा, "अपने घराने समेत कश्ती में दाख़िल हो जा, क्योंकि इस दौर के लोगों में से मैंने सिर्फ़ तुझे रास्तबाज़ पाया है। हर क़िस्म के पाक जानवरों में से सात सात नरो-मादा के जोड़े जबकि नापाक जानवरों में से नरो-मादा का सिर्फ़ एक एक जोड़ा साथ ले जाना। इसी तरह हर क़िस्म के पर रखनेवालों में से सात सात नरो-मादा के जोड़े भी साथ ले जाना ताकि उनकी नसलें बची रहें। एक हफ़्ते के बाद मैं चालीस दिन और चालीस रात मुतवातिर बारिश बरसाऊँगा। इससे मैं तमाम जानदारों को रूए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा, अगरचे मैं ही ने उन्हें बनाया है।"

नूह ने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था। वह 600 साल का था जब यह तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आया।

तूफ़ानी सैलाब से बचने के लिए नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं के साथ कश्ती में सवार हुआ। ज़मीन पर फिरनेवाले पाक और नापाक जानवर, पर रखनेवाले और तमाम रेंगनेवाले जानवर भी आए। नरो-मादा की सूरत में दो दो होकर वह नूह के पास आकर कश्ती में सवार हुए। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था। एक हफ़्ते के बाद तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आ गया।

यह सब कुछ उस वक़्त हुआ जब नूह 600 साल का था। दूसरे महीने के 17वें दिन ज़मीन की गहराइयों में से तमाम चश्मे फूट निकले और आसमान पर पानी के दरीचे खुल गए। चालीस दिन और चालीस रात तक मूसलाधार बारिश होती रही। जब बारिश शुरू हुई तो नूह, उसके बेटे सिम, हाम और याफ़त, उसकी बीवी और बहुएँ कश्ती में सवार हो चुके थे। उनके साथ हर क़िस्म के जंगली जानवर, मवेशी, रेंगने और पर रखनेवाले जानवर थे। हर क़िस्म के जानदार दो दो होकर नूह के पास आकर कश्ती में सवार हो चुके थे। नरो-मादा आए थे। सब कुछ वैसा ही हुआ था जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था। फिर रब ने दरवाज़े को बंद कर दिया।

चालीस दिन तक तूफ़ानी सैलाब जारी रहा। पानी चढ़ा तो उसने कश्ती को ज़मीन पर से उठा लिया। पानी ज़ोर पकड़कर बहुत बढ़ गया, और कश्ती उस पर तैरने लगी। आख़िरकार पानी इतना ज़्यादा हो गया कि तमाम ऊँचे पहाड़ भी उसमें छुप गए, बल्कि सबसे ऊँची चोटी पर पानी की गहराई 20 फ़ुट थी। ज़मीन पर रहनेवाली हर मख़लूक़ हलाक हुई। परिंदे, मवेशी, जंगली जानवर, तमाम जानदार जिनसे ज़मीन भरी हुई थी और इनसान, सब कुछ मर गया। ज़मीन पर हर जानदार मख़लूक़ हलाक हुई। यों हर मख़लूक़ को रूए-ज़मीन पर से मिटा दिया गया। इनसान, ज़मीन

पर फिरने और रेंगनेवाले जानवर और परिंदे, सब कुछ ख़त्म कर दिया गया। सिर्फ़ नूह और कश्ती में सवार उसके साथी बच गए। सैलाब डेढ़ सौ दिन तक ज़मीन पर ग़ालिब रहा।

सैलाब का इख़्तिताम

लेकिन अल्लाह को नूह और तमाम जानवर याद रहे जो कश्ती में थे। उसने हवा चला दी जिससे पानी कम होने लगा। ज़मीन के चश्मे और आसमान पर के पानी के दरीचे बंद हो गए, और बारिश रुक गई। पानी घटता गया। 150 दिन के बाद वह काफ़ी कम हो गया था। सातवें महीने के 17वें दिन कश्ती अरारात के एक पहाड़ पर टिक गई। दसवें महीने के पहले दिन पानी इतना कम हो गया था कि पहाड़ों की चोटियाँ नज़र आने लगी थीं।

चालीस दिन के बाद नूह ने कश्ती की खिड़की खोलकर एक कौआ छोड़ दिया, और वह उड़कर चला गया। लेकिन जब तक ज़मीन पर पानी था वह आता-जाता रहा। फिर नूह ने एक कबूतर छोड़ दिया ताकि पता चले कि ज़मीन पानी से निकल आई है या नहीं। लेकिन कबूतर को कहीं भी बैठने की जगह न मिली, क्योंकि अब तक पूरी ज़मीन पर पानी ही पानी था। वह कश्ती और नूह के पास वापस आ गया, और नूह ने अपना हाथ बढ़ाया और कबूतर को पकड़कर अपने पास कश्ती में रख लिया।

उसने एक हफ़ता और इंतज़ार करके कबूतर को दुबारा छोड़ दिया। शाम के वक़्त वह लौट आया। इस दफ़ा उसकी चोंच में ज़ैतून का ताज़ा पत्ता था। तब नूह को मालूम हुआ कि ज़मीन पानी से निकल आई है।

उसने मज़ीद एक हफ़ते के बाद कबूतर को छोड़ दिया। इस दफ़ा वह वापस न आया।

जब नूह 601 साल का था तो पहले महीने के पहले दिन ज़मीन की सतह पर पानी ख़त्म हो गया। तब नूह ने कश्ती की छत खोल दी और देखा कि ज़मीन की सतह पर पानी नहीं है। दूसरे महीने के 27वें दिन ज़मीन बिलकुल ख़ुश्क हो गई।

फिर अल्लाह ने नूह से कहा, "अपनी बीवी, बेटों और बहुओं के साथ कश्ती से निकल आ। जितने भी जानवर साथ हैं उन्हें निकाल दे, ख़ाह परिंदे हों, ख़ाह ज़मीन पर फिरने या रेंगनेवाले जानवर। वह दुनिया में फैल जाएँ, नसल बढ़ाएँ और तादाद में बढ़ते जाएँ।"

चुनाँचे नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं समेत निकल आया। तमाम जानवर और परिंदे भी अपनी अपनी क़िस्म के गुरोहों में कश्ती से निकले।

उस वक़्त नूह ने रब के लिए क़ुरबानगाह बनाई। उसने तमाम फिरने और उड़नेवाले पाक जानवरों में से कुछ चुनकर उन्हें ज़बह किया और क़ुरबानगाह पर पूरी तरह जला दिया। यह क़ुरबानियाँ

देखकर रब ख़ुश हुआ और अपने दिल में कहा, “अब से मैं कभी ज़मीन पर इनसान की वजह से लानत नहीं भेजूँगा, क्योंकि उसका दिल बचपन ही से बुराई की तरफ़ मायल है। अब से मैं कभी इस तरह तमाम जान रखनेवाली मख़लूक़ात को रूए-ज़मीन पर से नहीं मिटाऊँगा। दुनिया के मुक़र्ररा औक़ात जारी रहेंगे। बीज बोने और फ़सल काटने का वक़्त, ठंड और तपिश, गरमियों और सर्दियों का मौसम, दिन और रात, यह सब कुछ दुनिया के अख़ीर तक क़ायम रहेगा।”

अल्लाह का नूह के साथ अहद

फिर अल्लाह ने नूह और उसके बेटों को बरकत देकर कहा, “फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे भर जाए। ज़मीन पर फिरने और रेंगनेवाले जानवर, परिंदे और मछलियाँ सब तुमसे डरेंगे। उन्हें तुम्हारे इख़्तियार में कर दिया गया है। जिस तरह मैंने तुम्हारे खाने के लिए पौधों की पैदावार मुक़र्रर की है उसी तरह अब से तुम्हें हर क़िस्म के जानवर खाने की इजाज़त भी है। लेकिन ख़बरदार! ऐसा गोश्त न खाना जिसमें ख़ून है, क्योंकि ख़ून में उसकी जान है।

किसी की जान लेना मना है। जो ऐसा करेगा उसे अपनी जान देनी पड़ेगी, ख़ाह वह इनसान हो या हैवान। मैं ख़ुद इसका मुतालबा करूँगा। जो भी किसी का ख़ून बहाए उसका ख़ून भी बहाया

जाएगा। क्योंकि अल्लाह ने इनसान को अपनी सूरत पर बनाया है।
अब फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया में फैल जाओ।”
तब अल्लाह ने नूह और उसके बेटों से कहा, “अब मैं तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के साथ अहद क़ायम करता हूँ। यह अहद उन तमाम जानवरों के साथ भी होगा जो कश्ती में से निकले हैं यानी परिंदों, मवेशियों और ज़मीन पर के तमाम जानवरों के साथ। मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधकर वादा करता हूँ कि अब से ऐसा कभी नहीं होगा कि ज़मीन की तमाम ज़िंदगी सैलाब से ख़त्म कर दी जाएगी। अब से ऐसा सैलाब कभी नहीं आएगा जो पूरी ज़मीन को तबाह कर दे। इस अबदी अहद का निशान जो मैं तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ क़ायम कर रहा हूँ यह है कि मैं अपनी कमान बादलों में रखता हूँ। वह मेरे दुनिया के साथ अहद का निशान होगा। जब कभी मेरे कहने पर आसमान पर बादल छा जाएँगे और क़ौसे-क़ुज़ह उनमें से नज़र आएगी तो मैं यह अहद याद करूँगा जो तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ किया गया है। अब कभी भी ऐसा सैलाब नहीं आएगा जो तमाम ज़िंदगी को हलाक कर दे। क़ौसे-क़ुज़ह नज़र आएगी तो मैं उसे देखकर उस दायमी अहद को याद करूँगा जो मेरे और दुनिया की तमाम जानदार मख़लूक़ात के दरमियान है।

यह उस अहद का निशान है जो मैंने दुनिया के तमाम जानदारों के साथ किया है।”